REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

इंटरनेट से सामाजिक बदलाव और डिजिटल डिवाइड

डॉ. सुनिल घोडके
सहायक प्राध्यापक , जन संचार विभाग,
झारखंड केंद्रिय विश्वविद्यालय, रांची.

प्रस्तावना :

संचार का सीधा सा मतलब है दो या दो से अधिक कर्त्ताओं के बीच सूचनाओं और संवादों का आदान–प्रदान। संचार को सफल बनाने के लिए जरुरी है कि दोनों पक्ष आपस में भेजे गये संदेशों और संकेतों को पहचानने और समझने की क्षमता से लैस हों। विज्ञान प्रौद्योगिकी की मदद से यह परस्पर विनिमय उत्तरोत्तर सहज और सुगम होता जा रहा है। 90 के दशक की शुरूआत में इंटरनेट बेहद सीमित और बेहद महंगा माध्यम था। बीस वर्षों के बाद आज इंटरनेट इस्तेमाल में हम दुनिया में यूएसए और चीन के बाद तीसरे नंबर पर हैं देश में जरूरी ग्राहक सेवाएं नेट पर उपलब्ध हैं– रेल रिजर्वेशन से लेकर बैंकिंग तक। खाने–पीने के ऑर्डर से लेकर ई–मेल, चैटिंग, वेबसाईट्स, ब्लॉगस, न्युजगृप, विकीपिडीया, इ–ग्रंथालय और सर्च इंजन में बहुत कुछ बस एक क्लिक में हमें सूचानाएं उपलब्ध कराती है। ट्राई के मुताबिक 31 मार्च, 2013 तक देश में लगभग 16.47 करोड़ लोगों को इंटरनेट कनेक्शन दिए गये थे, जिनमें मोबाइल और टेबलेट के जरिए होने वाली सर्फिंग का आंकड़ा करीब 14 फीसदी है। यही हाल रहा तो अगले एक साल में हम इंटरनेट इस्तेमाल करने में यूएसए से आगे होंगे। लेकिन यह सिक्के का पहला पहलू है अब सिक्के दूसरे पहलू पर भी हमे शोध–प्रपत्र के माध्यम से विचार करना है। इसके दूसरे पहलू के प्रथम इकाई में सूचना प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक अंतःक्रिया है। **बार्कर (1997)** की मान्यता है कि आज हमारा समाज तेजी से जनसमाज की शक्ल ले रहा है। यह रूपांतरण विगत 15–20 वर्षों से तेजी से हुआ और आर्थिक उदारीकरण, सूचना एवं प्रौद्योगिकी की नयी प्रविधि, उत्पादन–पुनरुत्पादन की अत्याधुनिक तकनीकी, सूचना समाज के विकास और राष्ट्रीय विज्ञापन के उदय ने इसे संभव बनाया। जनसमाज के रूपांतरण के कारण प्राचीन आस्थाएँ, मूल्य, संस्कार और आदतों को तेजी से झटके लगे। **बेक (2000)** इस मत से सहमत है कि जनसमाज की इस प्रक्रिया की त्रासदी यह है कि इसकी कोई देशज विशेषताएँ अभी तक पैदा नहीं हुई। अभी तक जो 'फिनोमिना' दिखाई दे रहे हैं वे आयातित हैं, आरोपित हैं। उनका स्वभाविक ढ़ग से विकास नहीं हुआ। वस्तुतः 'जनता' की धारण को हीं लें आज 'जनता' तेजी से 'जनसमूह' में बदल रही है, बहुत सारे उत्पीड़ित वर्गों के संघर्षों के कारण हमें औपनिवेशक मुक्ति मिली, लोकतंत्र एवं सार्वभौम राष्ट्र का उदय हुआ। अलेक्जेंडर (1998) के अनुसार आजादी के बाद के आरंभिक दो दशकों तक जनता की राजनीतिक शिरकत एवं सक्रियता भी रही, कालातंर में 'जनता' का छोटे–छोटे समूह में सीमित लक्ष्यों एवं मांगो पर विभाजन होने लगा यह प्रक्रिया मूलतः 'जनता' के विखंडन की ओर खींचती हैं। 'जनता' के 'विखंडन' के तत्व, विचार और ऊर्जा पूर्वसंचित कोश से ली गयी। परिणामतः एक नये समूह या समूहों का उदय हुआ है। ये वे जनसमूह हैं जो टुकड़ों में विभिन्न मुद्दों पर अलग–अलग रंगत होने के बावजूद मूलतः जनसमूह हैं।

जनसमूह का सदस्य ऐसा व्यक्ति होता है जो अपनी स्वतंत्रता खो चुका है। स्वतंत्रता का अर्थ अब वस्तुओं की प्राप्ति की स्वतंत्रता मान लिया गया। स्वतंत्रता का विचार अब जीवन मूल्य नहीं रह जाता अपितु वस्तु मूल्य में बदल जाता है। **सिंह (1994)** की राय में व्यक्ति अपने मन में सोचने और तदनुरूप जीवन शैली की दिशा

तय करने की दृष्टि भूल चुका है। अब सब कुछ अनुकरण पर निर्भर है। पसंद, जीवनशैली और विवेक सब कुछ दूसरों के प्रयोग और लोकप्रियता पर निर्भर हो गया है। शोध–प्रपत्र की दूसर इकाई डिजिटल डिवाइड है जिसका अर्थ है कम्प्यूटर और इंटरनेट इस्तेमाल करने और संसाधनों की कमी के कारण न कर सकने वालों के बीच का वह अंतर जिसके कारण एक व्यक्ति, समुदाय या राष्ट्र सूचना–समृद्ध हो जाता है और दूसरा सूचना–दरिद्र रह जाता है। ग्लोबल पैमाने पर दुनिया को एक तरह के लोकतांत्रिक प्रौद्योगिकीय यूटोपिया की तरफ ले जाने वाली परिघटना डिजिटल डिवाइड की हकीकत से सवालिया निशानों में घिर जाती है। अगर यह मान लिया जाए कि कम्प्यूटर और इंटरनेट में हाशियाग्रस्त लोगों की रोजाना की जिंदगी बेहतर बनाते हुए अधिक सामाजिक समानता और सबलीकरण की संभावनाएँ हैं, तो आज के सूचना–युग में डिजिटल डिवाइड एक चिंताजनक स्थिति है। इसलिए सूचना प्रौद्योगिकी से लाभांवित हो रहे और वंचित रह जाने वालों के बीच संख्यात्मक अंतराल का मतलब केवल यह नहीं रह गया कि लोग नेटवर्क सोसाइटी में भागीदारी कर पा रहे हैं या नहीं, बल्कि डिजिटल डिवाइड को गरीबी और विषमता की निरंतरता जैसी व्यापक और जटिल समस्या के लक्षण के रूप में भी देखा जाने लगा है। इस लिहाज से डिजिटल डिवाइड के आईने में आर्थिक–सामाजिक हैसियत, आमदनी, शिक्षा के स्तर और नस्ली मूल के आधार पर बँटी हुई दुनिया को भी देखने को मिला है। इसलिए इस विषय में क्या असलियत है? यह जानने का प्रयास इस सर्वे द्वारा किया गया है। इंटरनेट, सामाजिक अंतःक्रिया एवं डिजिटल डिवाइड की शिनाख्त रांची शहर के भीतर की गई है।

उपकल्पना :

- **सूचना प्रौद्योगिकी के संपर्क माध्यमों में इंटरनेट एक प्रभावी माध्यम है।**
- **सूचना प्रौद्योगिकी आने से सभी जन को सूचना बराबर प्रेक्षित हो रही है।**
- **इंटरनेट के आने से सूचना का आदान–प्रदान तीव्र गति से हो रहा है।**

शोध प्रविधि :

सूचना–समाज में इंटरनेट का योगदान और डिजिटल डिवाइड एक अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा शहर के 150 उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन प्रणाली के आधार पर किया गया।

तालिका नं.1
सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े साधनों का प्रभाव

विकल्प	उत्तरदाता प्रतिक्रिया
समाचार–पत्र	29.4%
रेडियो	19.6%
टेलीविजन	42%
कंप्यूटर	6.7%
उपर्युक्त सभी साधन	2.3%

सामाजिक परिवर्त्य एवं सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित साधन

समाजिक परिवर्त्य	रेडियो	टेलीविजन	समाचार–पत्र	कंप्यूटर	सभी
जाति					
उच्च जाति	15.8%	41.1%	30.9%	10.9%	1.3%
पिछड़ी जाति	20.6%	45.1%	29.5%	2.9%	1.9%
अनुसूचित जाति	28.9%	38.5%	25.0%	1.9%	5.7%
आयु					
0–35 तक	21.6%	43.1%	27.6%	5.8%	0.9%

36–45	20.0%	36.5%	35.3%	5.9%	2.3%
46–55	16.4%	49.2%	24.6%	6.6%	3.2%
55 से अधिक	18.4%	39.5%	28.9%	7.9%	5.3%
शिक्षा					
स्नातक	20.8%	41.7%	27.8%	6.2%	3.5%
स्नातकोत्तर	26.1%	52.1%	19.8%	1.0%	1.0%
अन्य	6.7%	26.7%	48.4%	16.6%	1.6%
आय					
8000 तक	14.5%	17.1%	53.9%	13.2%	1.3%
8001–11000	29.4%	49.1%	16.7%	3.9%	0.9%
11001–14000	20.1%	30.0%	40.0%	6.0%	4.0%
14001–17000	11.1%	66.6%	13.4%	4.4%	4.4%
17000से अधिक	11.2%	66.6%	14.8%	3.7%	3.7%

सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित सर्वाधिक प्रभावकारी साधनों का अध्ययन किया गया है जिससे यह पता चलता है कि सर्वाधिक व्यक्ति किन साधनों से प्रभावित हैं। प्रस्तुत तालिका नं–1 से पता चलता है कि सर्वाधिक 42% उत्तरदाता टेलीविजन से, 29.4% समाचार–पत्र से, 19.6% रेडियो से 6.7% कंप्यूटर से एवं न्यूनतम 2. 3% उत्तरदाता इन सभी साधनों से प्रभावित है।

जाति के आधार पर परिलक्षित होता है कि उच्च जाति, पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति तीनों वर्गों के अधिकतम उत्तरदाता टेलीविजन जैसे सूचना प्रौद्यौगिकी के साधन से सर्वाधिक प्रभावित है जबकि कंप्यूटर जैसे अत्याधुनिक साधनों का प्रभाव उच्च जाति पर सर्वाधिक 10.9% उत्तरदाताओं पर एवं न्यूनतम 1.9% अनुसूचित जाति के उत्तरदाताओं पर है।

आयु के आधार पर ज्ञात होता है कि प्रत्येक आयु वर्ग में सूचना प्रौद्योगिकी के सर्वाधिक प्रबल साधन के रूप में अधिकतम उत्तरदाताओं पर टेलीविजन का प्रभाव सर्वाधिक है। सूचना प्रौद्योगिकी के इन सभी साधनों से 35 वर्ष तक के उत्तरदाता यानि युवा पीढ़ि सबसे कम प्रभावित है जबकि 55 वर्ष के ऊपर के उत्तरदाता इन सभी साधनों से तुलनात्मक रूप से अन्य आयु वर्ग की तुलना में अधिक प्रभावित है।

शिक्षा के आधार पर स्पष्ट होता है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षित अधिकतम उत्तरदाता टेलीविजन जैसे साधन से प्रभावित है जबकि न्यूनतम उत्तरदाता सूचना प्रौद्योगिकी के इन सभी साधनों से प्रभावित है। अन्य स्तर के शिक्षित उत्तरदाता सबसे कम 1.0% प्रभावित है जबकि अन्य स्तर के शिक्षित सर्वाधिक 16.6% प्रभावित है।

आय के आधार पर स्पष्ट होता है कि 8001–11000, 14,0001–17,000 एवं 17,000 से अधिक आय के सर्वाधिक उत्तरदाता टेलीविजन जैसे साधन से सर्वाधिक प्रभावित हैं जबकि इन आय वर्गों में सूचना प्रौद्योगिकी के इन सभी साधनों से न्यूनतम उत्तरदाता प्रभावित हैं। 8000 तक के आय वाले उत्तरदाता एवं 11,001–14,000 तक के आय अधिकतम उत्तरदाता समाचार–पत्र जैसे सूचना प्रौद्योगिकी के साधन से प्रभावित हैं। यहाँ पर यह भी देखने को मिलता है कि सबसे कम आय वर्ग के उत्तरदाताओं पर कंप्यूटर का प्रभाव सर्वाधिक 13.2% एवं सबसे अधिक आय वर्ग में कंप्यूटर का प्रभाव सबसे कम 3.7% है।

तालिका नं. 2
इंटरनेट के प्रति आपके विचार

विकल्प	पूर्णतय सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतयः असहमत
इंटरनेट के आने से सूचना का आदान–प्रदान तीव्र गति से हुआ है ?	50%	47%	3%	–	–
इंटरनेट के आने से शिक्षा से संबंधित क्षेत्र की जानकारी सभी छात्रों के पास बराबर मात्रा में पहुंच पा रही है ?	50%	–	–	46.66%	3.33%

तलिका नं.2 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या इंटरनेट के आने से सूचना का आदान–प्रदान तीव्र गति से हुआ है? तो 50% उत्तरदाताओं ने इस पर अपनी पूर्णतया सहमति बताई जबकि 47% प्रतिशत इस बात से सिर्फ सहमत थे, वहीं 3% प्रतिशत उत्तरदाता इस प्रश्न पर असमंजस की स्थिति में थे, वे कुछ भी जवाब नहीं दे पाए।

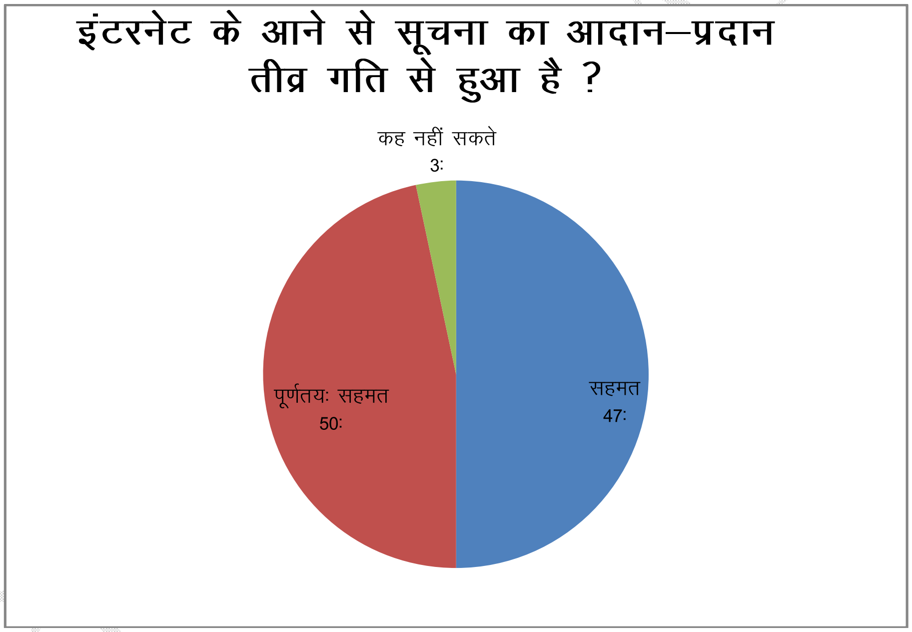

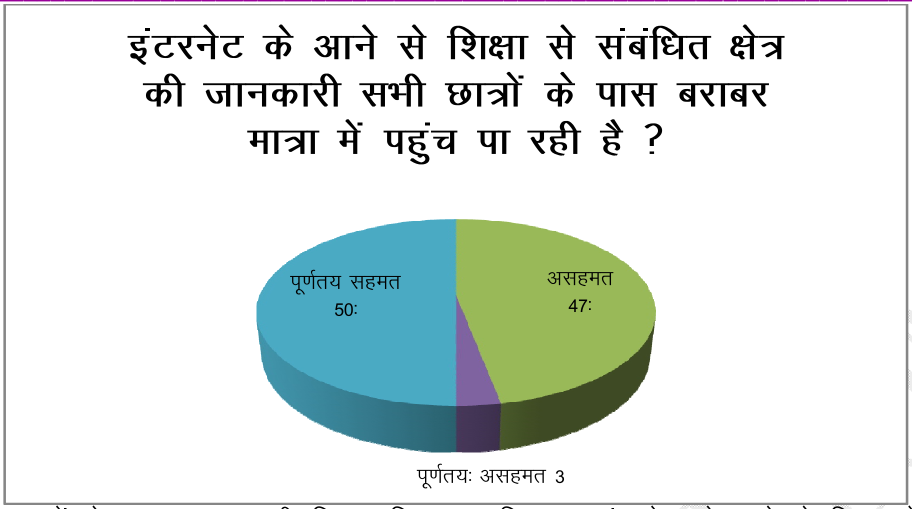

उत्तरदाताओं से इस बात पर भी विचार लिए गए कि क्या इंटरनेट के आने से शिक्षा से संबंधित क्षेत्र की जानकारी सभी छात्रों के पास बराबर मात्रा में पहुंच पा रही है ? इस पर 50% उत्तरदाताओं ने पूर्णतया सहमति देते हुए समर्थन किया है, जबकि 47% ने इस पर असहमति दर्शायी है, वहीं 3% इस बात का विरोध करते हैं।

निष्कर्ष :

सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों से प्रभावित होने के आधार पर आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि सर्वाधिक 42% उत्तरदाता टेलीविजन से, 29.4% समाचार–पत्र से, 19.6% रेडियो से, 6.7% कंप्यूटर से तथा 2.3% इन सभी साधनों से प्रभावित है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि कंप्यूटर सूचना प्रौद्योगिकी का आधुनिक साधन होने के बावजूद अभी भी संपूर्ण जनसमाज को प्रभावित करने में काफी पीछे हैं और टेलीविजन का प्रभाव समाज पर बहुत व्यापक है। 50% उत्तरदाताओं ने इस पर अपनी पूर्णतया सहमति बताई कि इंटरनेट के आने से सूचना का आदान–प्रदान तीव्र गति से हुआ है। यह संचार प्रक्रिया सुलभ बनाने में अपनी भूमिका का निर्वाह बेहतर निभा रहा है। 50% उत्तरदाताओं ने पूर्णतया सहमति देते हुए समर्थन किया है कि शिक्षा से संबंधित क्षेत्र की जानकारी सभी छात्रों के पास बराबर मात्रा में पहुंच पा रही है।

• संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Alexander, C. (1998): Digital Democracy, oxford University Press, Oxford.
2. Ajay, S. (2002): Information Technology an Journalism, Kanishka publisher, New Delhi.
3. Hodgson, W.F. (1984, 1989): Modern Newspaper Practice, Heinemann professional Publishing LTD, UK.
4. Corey, Sandler (1986): How To Telecommunicate, Henry Holt and Company, Giamburuno, USA.
5. पारख, जवरीमल्ल (2000), जनसंचार माध्यमों का वैचाकि परिप्रेक्ष्य, नाइस प्रिटिंग प्रेस, दिल्ली।

डॉ. सुनिल घोडके
सहायक प्राध्यापक , जन संचार विभाग, झारखंड केंद्रिय विश्वविद्यालय, रांची.